जीवन

आकाश कुमार
रूड़की

जीवन क्या है आज मैं तुम्हें बतला दूँ !
कैसे इसे सहना आज तुम्हें सिखा दूँ !
सोच–सोचकर आँखों में नई चमक है, आती !
मगर कुछ देर में ही नई परेशानी शुरू हो जाती !

क्या होता है जीवन हम लोगों को क्या पता !
समझ नहीं आता कहाँ हो गई हमसे खता !
जीवन है परेशानी का यह बवंडर !
ऐसा लगता है मानो जीवन हो गया हमारा खंडर !

जीवन है एक अजीब पहेली,
कभी दुश्मन तो कभी सहेली !
आस–पड़ोस की सारी खबरें दिन–रात सताती,
लेकिन जीवन है एक वरदान यह बात समझ नहीं आती !

कभी–कभी लगता है मानो उड़ गये हों जीवन के पन्ने,
रस भी खो चुके हों जैसे जीवन रूपी गन्ने !
कभी आशाओं की किरणें आती, कभी उम्मीदों की बौछारें आती!

जीवन क्या है आज मैं तुम्हें बतला दूँ !
कैसे इसे सहना आज तुम्हें सिखा दूँ !!

हिन्दी से किसी भी भारतीय भाषा को भय नहीं है, यह सबकी सहोदरा है।

महादेवी वर्मा